Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar Madhubani
Mail ID :- rajgopal7755@gmail.com.

Locke : Simple and Complex Ideas

(लॉक : सरल एवं जटिल प्रत्यय)

दर्शन के क्षेत्र में अनुभववादी परम्परा का शुरुआत सोफिस्टों (प्रोटागोरस आदि) के समय से ही हुआ था। इसके बाद बेकन और हाब्स का झुकाव भी अनुभववाद की ओर था। लेकिन अनुभववाद को एक व्यवस्थित दार्शनिक विचारधारा के स्थापित करने का श्रेय लॉक, बर्कले ह्यूम को जाता है। आधुनिक युग में अनुभववादी ज्ञानमीमांसा का प्रवर्तक जान लॉक है। जन्मजात प्रत्यय के खंडन के उपरांत लॉक ने अनुभववादी ज्ञानमीमांसा का प्रतिपादन किया। इसी के परिप्रेक्ष्य में वे मानव बुद्धि के विषय एवं वैचारिक प्रक्रिया का विश्लेषण प्रस्तुत किया।

लॉक का मानना है कि ज्ञान का मूल स्रोत अनुभव है। आत्मा स्वाभावतः ज्ञान से शून्य है। संवेदन और स्वसंवेदन के द्वारा आत्मा में ज्ञान उत्पन्न होता है। यहाँ संवेदनों के द्वारा ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से बाह्य वस्तुओं के गुणों का ज्ञान होता है। इसी प्रकार मन की आंतरिक अवस्थाओं का ज्ञान स्वसंवेदनों से होता है जैसे- संदेह करना, विश्वास करना, तर्क करना आदि। उदाहरण के लिए मैं बहुत दुःखी हूँ, पर प्रसन्न है इत्यादि अनुभूतियाँ स्वसंवेदन से उत्पन्न होती हैं। लॉक के अनुसार आत्मा में ज्ञान की उत्पत्ति इन्हीं दो स्रोतों से होती है। ज्ञान का मूल स्रोत अनुभवजन्य है अर्थात संवेदन और स्वसंवेदन है। लॉक इसे प्रत्यय कहते हैं। यहाँ प्रत्यय से तात्पर्य मन के अंदर जो कुछ भी प्रत्यक्ष, विचारणा अथवा बोध का अपरोक्ष विषय होता है उसे प्रत्यय

Scanned with CamScanner

कहते हैं। इस प्रकार जब मनुष्य चिन्तन करता है तब उसके बुद्धि में जो ज्ञान जो भी विषय होता है वह प्रत्यय है। लॉक ने प्रत्यय को दो वर्गों में विभाजित किया है - (i) सरल प्रत्यय (ii) जटिल प्रत्यय या मिश्र प्रत्यय

(i) सरल प्रत्यय :- सरल प्रत्यय वे हैं जो संवेदनों अथवा स्वसंवेदन से मन में तुरंत उत्पन्न होने वाले प्रत्यय हैं। सरल प्रत्यय बाह्य या आन्तरिक प्रत्यक्ष से बोध प्रथम प्रत्यय है। इसे सरल प्रत्यय इसलिए कहा जाता है कि यह बाह्य या आन्तरिक विषय से उत्पन्न है तथा इसमें किसी प्रकार का मिश्रण नहीं है। सरल प्रत्यय चार प्रकार के होते हैं।

(i) एक इन्द्रिय से प्राप्त प्रत्यय :- कुछ प्रत्यय हमारे मन में केवल एक ही इन्द्रिय के द्वारा बोध होते हैं। जैसे प्रकाश और रंगों का बोध केवल आँखों के द्वारा होता है। ध्वनि का कानों के द्वारा, स्वाद का जीभ के द्वारा। ये सभी इन्हीं प्रत्ययों के ग्रहण करने के लिए समर्थ हैं। किसी कारणवश ये इन्द्रियाँ कार्य करना समाप्त कर देती हैं तो उससे संबंधित प्रत्यय का मन में कोई तुरंग नहीं होता है। इस कारण ये प्रत्यय अज्ञेय ही रह जाते हैं।

(ii) एक से अधिक इन्द्रियों से प्राप्त प्रत्यय :- एक से अधिक इन्द्रियों के संवेदनों से उत्पन्न होने वाला सरल प्रत्यय, गति, विस्तार, आकार, विस्तार, आकृति स्थिरता आदि हैं। ये आँख और त्वचा दोनों पर स्पष्ट छाप अंकित करते हैं। इसका बोध दोनों के माध्यम से प्राप्त होता है।

(iii) स्वसंवेदन से प्राप्त प्रत्यय :- इसके अन्तर्गत चिन्तन एवं संकल्प के प्रत्यय आते हैं। मन के ये दो नये कर्म हैं। मन की इन दोनों योग्यताओं को मानसिक शक्तियाँ कहा जाता है। स्मृति, विवेक, तर्कणा, निर्णय आदि स्वसंवेदन प्रत्यय के कुछ प्रकार हैं।

Scanned with CamScanner

(iv) संवेदन और स्वसंवेदन से प्राप्त प्रत्यय :- कुछ प्रत्यय संवेदन एवं स्वसंवेदन के संयुक्त व्यापार से उत्पन्न होते हैं। इनके अन्तर्गत सुख-दुख, शक्ति, चिंता, इच्छा, अनुकूल आदि के प्रत्यय आते हैं।

लॉक के अनुसार ये चार प्रकार के सरल प्रत्यय ही समस्त ज्ञान के घटक हैं। सरल प्रत्यय हमारी आत्मा के लिए अवश्य हैं। इनको ग्रहण करने के लिए आत्मा को सक्रिय होने की आवश्यकता नहीं है। आत्मा स्वतः इन सरल प्रत्ययों को ग्रहण कर लेता है। किन्तु आत्मा इन सरल प्रत्ययों को उत्पन्न नहीं कर सकता है। इन प्रत्ययों के उत्पन्न करने की संवेदनाएँ बाह्य वस्तुओं से आती हैं। प्रत्यय आत्मा की उपज नहीं है। अतः लॉक एक वस्तुवादी दार्शनिक हैं। जिस प्रकार से 26 अक्षरों से अनेक शब्द बनाये जा सकते हैं उसी प्रकार से इन चार प्रकार के सरल प्रत्ययों से समस्त ज्ञान को प्राप्त किया जा सकता है।

(2.) मिश्र या जटिल प्रत्यय :- अनेक प्रकार के सरल प्रत्ययों के सम्मिश्रण से निर्मित प्रत्यय को मिश्र प्रत्यय कहते हैं। वहाँ सरल प्रत्ययों के ग्रहण करने में आत्मा निष्क्रिय रहती है। वहीं मिश्र प्रत्ययों की रचना में मानव बुद्धि का सक्रिय रहती है। सरल प्रत्ययों से मिश्र प्रत्ययों का निर्माण लॉक ने छः चरणों में संपादित किया है। जो निम्न है।

(i) प्रत्यक्षीकरण, अर्थात आत्मा के द्वारा सरल प्रत्ययों को ग्रहण किया जाना।

(ii) प्रत्यक्ष करने के पश्चात कुछ समय तक इन सरल प्रत्ययों का धारणा करना ताकि वो भूला ना जा सके।

(iii) विभिन्न प्रत्ययों के पृथकता का ज्ञान होना ताकि इनको एक दूसरे से पृथक किया जा सके।

(iv) बुद्धि के द्वारा इन प्रत्ययों का परस्पर तुलना करना

(v) संयोजन अर्थात इन सरल प्रत्ययों का एक साथ संयुक्त करना।

(vi) अमूर्तीकरण एवं नामाकरण। इस प्रक्रिया के द्वारा कुछ सरल प्रत्ययों के सामान्य लक्षणों को ग्रहण करके और विशिष्ट लक्षणों का निराकरण करके सामान्य प्रत्ययों की रचना की जाती है। अमूर्तीकरण एवं नामाकरण मनुष्य की विशेषता है जो पशुओं में नहीं पायी जाती है।

Scanned with CamScanner

इसी प्रकार से लॉक के अनुसार आत्मा की सक्रिय अवस्था में सरल प्रत्ययों से जटिल प्रत्यय की रचना होती है। जटिल प्रत्यय तीन प्रकार के होते हैं। जो निम्न हैं।

(i) विकार के जटिल प्रत्यय :- इनकी स्वतंत्र सत्ता नहीं होती है यह द्रव्यों पर आश्रित है। ये दो प्रकार के होते हैं।

(a) सरल विकारों का जटिल प्रत्यय :- ये एक ही प्रकार के सरल प्रत्ययों से बनते हैं। जैसे महीना, सप्ताह, घंटा, क्षण आदि ~~काल~~ के सरल प्रत्यय से बने हुए विकार हैं।

(b) मिश्र प्रकार के जटिल विकार वे हैं जो अनेक सरल प्रत्ययों के सम्मिश्रण से बनते हैं। जैसे- सौन्दर्य का प्रत्यय रंग, आकृति आदि के प्रत्ययों के संयोग से बना है।

(ii) संबंधों का प्रत्यय :- संबंधों का जटिल प्रत्यय किसी बाह्य वस्तु का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। ये सरल प्रत्ययों के आधार पर बुद्धि द्वारा स्वयं बना लिये जाते हैं। जैसे - कारण-कार्य एक संबंध का प्रत्यय है। इसके अतिरिक्त आनुपातिक संबंध, प्राकृतिक संबंध (पिता-पुत्र का संबंध) सामाजिक संबंध आदि आते हैं।

(iii) द्रव्य के जटिल प्रत्यय :- द्रव्य के जटिल प्रत्यय स्वतंत्र वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते वाले सरल प्रत्ययों के सम्मिश्रण से बनते हैं। द्रव्य गुणों के जटिल प्रत्ययों से बनता है जो विशिष्ट वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करता है। जैसे आकार के प्रत्यय में गति, विचारशीलता आदि को मिलाकर उसमें द्रव्य को संयुक्त कर दिया जाय तो मनुष्य का प्रत्यय बनता है। मनुष्य का प्रत्यय व्यक्तिगत द्रव्य का प्रत्यय है। लॉक के अनुसार हमारा साक्षात संपर्क द्रव्य से नहीं होता है। बल्कि द्रव्य के गुणों से होता है।